'मास्टर' ग्रन्थमालायाः १२० संख्यकोमणिः (ज्योतिर्षविभागे २

ज्योतिर्विद्-खानखाना-नव्वाब-कृतं

खेटकौतुकम् ।



टीकाकारः—

पं० श्रीसीतारामझा, ज्यौ० आ०-तीर्थः

प्रकाशकः—

मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स, बनारस

मूल्यम् ।=)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ खेटकौतुकम् ।

प्रणम्य पावनं परं पुरारिपादपङ्कजम् ।
तनोमि खेटकौतुकीय-माशयं स्वभाषया ॥

यत्पदपङ्कजरेणोः प्रसादमासाद्य सर्वभुवनेषु ।
प्रणमामीष्टसुमूर्तिं तामहममराः प्रभुत्वमपि यान्ति ॥ १ ॥

भावार्थ—जिनके चरण-कमल की धूली के अनुग्रह से देवगण समस्त भुवनों में प्रभुता को प्राप्त करते हैं उन अपने इष्टदेव की मूर्ति को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

फारसीयपदमिलितग्रन्थाः खलु पण्डितैः कृताः पूर्वैः ।
सम्प्राप्य तत्पदपथं करवाणि खेटकौतुकं पद्यैः ॥ २ ॥

भावार्थ—प्राचीन पण्डितों ने फारसी शब्द मिश्रित संस्कृत पद्यों में अनेक ग्रन्थ बनाये हैं। मैं भी उन्हीं के चरण के मार्ग को अवलम्बन करके फारसी मिश्रित संस्कृत-पद्यों में खेटकौतुक नामक ग्रन्थ को बनाता हूँ ॥ २ ॥

अथ लग्नस्थसूर्यफलम्—

लग्नगः सम्शखेटस्तदा लागरः कामिनीदूषितो दुष्प्रजो वै यदा ।
पण्यरामारतो राशिमीजान्गतो मानहीनोऽथ हीर्षी विद्दष्टिः पुमान् ॥

भावार्थ—जिसके जन्मलग्न में सम्श (सूर्य) हो वह मनुष्य लागर (शरीर से दुबला), स्त्रियों से दूषित, दुष्ट सन्तानवाला, बाजार और वाटिका में टहलनेवाला होता है। यदि सूर्य राशिमीजान् (याने अपने

नीच तुला) में होकर लग्न में हो तो मानहीन, ईर्ष्या सहित और खराब दृष्टिवाला पुरुष होता है ॥ ३ ॥

द्वितीयभावस्थसूर्यफलम्—

यदा चश्मखाने भवेदाफ़ताबस्तदाज्ञानहीनोऽथ गुस्सर्व मुदाम् ।
सदा तङ्गदिल्शख्तगो द्रव्यहीनः कुरेशो गदा स्याद्बेहोशो दिवासाम् ॥

भावार्थ—यदि आफ़ताब (सूर्य) चश्मखाना (धनभाव) में हो तो वह मनुष्य ज्ञानहीन, अत्यन्त क्रोधी, सर्वदा तङ्गदिल, कृपण, द्रव्यहीन, कुरूप, रोगी और बेहोश (चेष्टाहीन याने सब काम को भूल जानेवाला) होता है ॥ ४ ॥

तृतीयभावस्थसूर्यफलम्—

यदा सम्शखेटस्तृतीयस्थितो नेकर्दानिरोगो हि शीरींसखुन् ।
सदा मोदते रम्यसीमन्तिनीभिः सवारो धनाढ्यो हि निःकोपशन् ।५।

भावार्थ—यदि सम्शखेट (सूर्य) तृतीयभाव में हो तो वह मनुष्य नामवर, किफ़ायती, नीरोग, मधुर वचन बोलने वाला होता है, और सुन्दरी स्त्रियों के साथ भोग करने वाला, सवारी पर चलने वाला, धनवान् और क्रोधहीन होता है ॥ ५ ॥

चतुर्थभावस्थसूर्यफलम्—

यदा मादरागारगः सम्शखेटः सुखी नो हि शंसः परेशानकः स्यात् ।
सदा म्लानचित्तोथ वेश्यारतो वा तथा जायते बेखुशी हिज्रगर्दः ॥

भावार्थ—यदि सम्शखेट (सूय) लग्न से मादरागार (चतुर्थ भाव) में हो तो वह मनुष्य सुखी नहीं होता, सर्वदा सन्देहयुक्त और परेशान (अर्थात् क्लेशित) रहता है। और मलिन मनवाला वेश्याओं में रत, बेसुखी (आनन्दहीन) और हिज्रगिर्द (व्यर्थ घूमनेवाला) होता है ॥

पञ्चमभावस्थसूर्यफलम्—

अक्लखाने यदा शम्शखेटस्तदा मानवो मानहीनः सदा जाहिलः ।
स्वल्पसङ्गप्रजश्चौर्यचिन्ताधियुग् गुस्सवरो धर्मकार्ये सदा काहिलः ॥

भावार्थ—यदि सूर्य अह्लखाना (पञ्चम भाव) में हो तो वह मनुष्य मानहीन, मूर्ख, थोड़ा स्त्रीसङ्ग और थोड़ा प्रजा (सन्तान) वाला होता है । तथा चिन्ता और व्यथा से युक्त, चोरी करने वाला, अत्यन्त क्रोधी और धर्म कार्य में काहिल (आलस करने वाला) होता है ॥ ७ ॥

षष्ठभावस्थसूर्यफलम्—

यदा मर्जखाने भवेदाफताबो जलीलो गनी खूबरोहं अवाचः ।
सदा मातृपक्षोद्धृतस्यायलब्धिर्निरोगो नरः शत्रुमर्दी तदा स्यात् ॥

भावार्थ—यदि आफताब (सूर्य) मर्जखाना (षष्ठभाव) में हो तो वह मनुष्य अत्यन्त धनी, अत्यन्त सुन्दर, कम बोलने वाला, मातृपक्ष (मातामह के घर) से सर्वदा धन प्राप्ति करने वाला, नीरोग शरीर वाला और शत्रुओं को जीतने वाला होता है ॥ ८ ॥

सप्तमभावस्थसूर्यफलम्—

यदा सम्शखेटः स्मरस्थानगश्चिन्तया व्याकुलो ना भवेत्कामुकः ।
सदा क्षीयते कामिनीभिर्महा वञ्चको युद्धभूमौ चलोजम्बरः ॥९॥

भावार्थ—यदि सूर्य स्मरस्थान (सप्तम भाव) में हो तो वह मनुष्य सर्वदा चिन्तायुक्त, व्याकुल, कामी, स्त्रियों से गञ्जित, महावञ्चक (ठग) और युद्धभूमि (लड़ाई) में विजयी होता है ॥ ९ ॥

अष्टमभावस्थसूर्यफलम्—

यदा सम्शखेटो भवेन्मौतखाने मुशाफिर्बिशे क्षुत्तृषापीडितो हि ।
सदोद्योगहीनो महालागरः स्त्रीयदेशं विहायान्यदेशाटनः स्यात् ॥

भावार्थ—यदि सूर्य मौतखाना (अष्टम भाव) में हो तो वह पुरुष भूख प्यास से पीड़ित होकर भ्रमण करता है । और सर्वदा उद्योगहीन महा दुबला, अपने देश को छोड़कर दूसरे देश में घूमनेवाला होता है ।

नवमभावगतसूर्यफलम्—

रवौ बेषखाने प्रसिद्धः सुखी मानवश्चान्यवित्तैरलं शोभते ।
विप्रवृन्दैर्युतो मातृपक्षात् सुखं नो धनाढ्यो यदा जायते बोचगः ॥

भावार्थ—यदि सूर्य वेषखाना (नवमभाव) में हो तो वह मनुष्य संसार में प्रसिद्ध, दूसरे के धन से सुखी और सुशोभित रहता है। और उसके कार्यों में बहुत विघ्न होता तथा मातृपक्ष (मातामह के घर) से सुख नहीं होता। यदि अपनी उच्चराशि (मेष) के सूर्य नवम भाव में हो तो अत्यन्त धनी होता है ॥११॥

दशमभावस्थसूर्यफलम्—

रवौ शाहखाने धनाढ्यो वफारस्तदा मोदते वाजिवृन्दैः सुखी च ।
महीपान्तिकी नेककिर्दा सुशीलो जमीले पितुः सौख्यमल्पं भवेद्वै ॥

भावार्थ—यदि सूर्य दशमभाव में हो तो वह मनुष्य धनवान्, शीलवान्, सुन्दर घोड़ों पर चढ़कर सुखी रहता है, सर्वदा सुखी, संसार में विख्यात, किफायत से काम करनेवाला होता है। यदि नीच राशि (तुला) का होकर दशमभाव में हो तो उसको पिता से थोड़ा सुख मिलता है ॥१२॥

एकादशभावस्थसूर्यफलम्—

यदा याफ्तिखाने भवेत्सम्शखेटः सुवेषो धनी वाहनाढ्योऽल्पशीलः ।
सुयोषः शुभौकाः सिपाही सलाही सविगीतगाने सुनेत्रोऽपि शिर्दार ॥

भावार्थ—यदि सूर्य एकादश भाव में हो तो वह मनुष्य सुन्दर रूपवाला, धनवान्, वाहन (सवारी) से युक्त, स्वभाव का ओछा, परम सुन्दर स्त्रीवाला, सुन्दर घरवाला, सिपाही रखनेवाला, सुन्दर मन्त्रीवाला, गीत में प्रेम करनेवाला, सुन्दर नेत्रवाला और लोगों में सरदार होता है ॥१३॥

द्वादशभावस्थसूर्यफलम्—

यदा खर्चखाने भवेत् सम्शखेटस्तदाक्ष्निर्मानहीनो नरः स्यात् ।
अहल्खर्चकः सत्क्रियो वा शरारत्पनाहः सदा पीड्यतेऽङ्गेषु रोगैः ॥

भावार्थ—यदि सूर्य खर्चखाना (द्वादश भाव) में हो तो वह मनुष्य आँखों से दुर्बल, (अर्थात् आँखों में कम तेजवाला विशेषकर

बायें आँख कमजोर वाला) होता है । और मानरहित, बहुत खर्च करने वाला, उत्तम कार्य करने वाला, दुष्टों की रक्षा करने वाला, और रोगों से सर्वदा पीड़ित होता है ॥१४॥

इति तन्वादिभावस्थसूर्यफलम् ।

अथ लग्नस्थचन्द्रफलम्—

जवर्कगार्यदाङ्गगस्तवङ्गरः सुरूपवान् ।
सुधीः सुखी नरो भवेद्विलोमगश्च तन्न हि ॥१५॥

भावार्थ—यदि पूर्णबली चन्द्रमा लग्न में हो तो वह मनुष्य धनवान्, रूपवान्, बुद्धिमान् और सुखी होता है। यदि विलोम याने निर्बल (शत्रु गृह नीच आदि में) हो तो उल्टा फल (निर्धन, कुरूप, निर्बुद्धि और दुःखी) होता है ॥१५॥

द्वितीयभावस्थचन्द्रफलम्—

कमर्यदा धनालये धनी दमी प्रियंवदः ।
विदूषको नरो भवेद्बलान्वितो यकी नरः ॥१६॥

भावार्थ—यदि चन्द्रमा लग्न से द्वितीय भाव में हो तो वह मनुष्य धनवान्, इन्द्रियजित्, प्रियवचन बोलनेवाला, विदूषक (कार्य करने में चतुर), बलवान् होता है। यदि चन्द्रमा बली हो तो विशेष फल, निबल हो तो उक्त फल अल्प होता है ॥१६॥

तृतीयभावस्थचन्द्रफलम्—

कमर्विलाधशालये नरो हि वा मुरौवतः ।
सदा वली च साविरः सुकर्मकृद्यदा भवेत् ॥१७॥

भावार्थ—यदि तृतीयभाव में चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य मुरौवत रखनेवाला, बलवान्, सन्तोष करनेवाला और सुकर्म करनेवाला होता है।

चतुर्थभावस्थचन्द्रफलम्—

कमर्यदाम्बुगेहगः सखी सुकर्वः प्रभुः ।

भवेन्नरश्च मञ्जिसी तदा बुधः सुभाग्यवान् ॥१८॥

भावार्थ—जिसके जन्मलग्न से चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो वह मनुष्य सखी (दाता), पुण्य करनेवाला, राजा या राजा सदृश, मञ्जिसी (मन का मलिन), पण्डित और सौभाग्यवान् होता है ॥१८॥

पञ्चमभावस्थचन्द्रफलम्—

कमर्यदेन्नगेहगः स गुल्फरू भवेन्नरः।
बलान्वितो हि पादकी नदिल्पिशर्मकानगः ॥१९॥

भावार्थ—यदि पञ्चमभाव में चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य विशेष तेजस्वी (अर्थात् कान्तिमान्), बलवान्, सवारी पर चलनेवाला, सब कार्य में सावधान रहनेवाला और शीलवान् होता है ॥१९॥

षष्ठभावस्थचन्द्रफलम्—

काललो विपक्षपक्षपीडितो हि बद्शकल्।
लागरः कमर्भवेद्रिपौ यदा नरः सरुक् ॥ २० ॥

भावार्थ—यदि चन्द्रमा छठे भाव में हो तो वह मनुष्य कालग्रस्त, शत्रुओं से पीड़ित, अत्यन्त कुरूप, दुर्बल शरीरवाला और रोगी होता है।

सप्तमभावस्थचन्द्रफलम्—

जन्मकामगः कमर्यदा भवेन्नरो भृशम्।
गुल्फरू यशी गनी यशः करोत्यहर्निशम् ॥ २१ ॥

भावार्थ—जिसके जन्मसमय चन्द्रमा काम (सप्तमभाव) में हो वह मनुष्य रूपवान्, नीरोग, धनी और यशस्वी होता है ॥ २१ ॥

अष्टमभावस्थचन्द्रफलम्—

उमर्गृहे कमर्यदा नरो भवेत्सदाऽऽमयी।
वहिर्जगुर्द गुस्सवर्व देग्नमुक् च निर्दयी ॥ २२ ॥

भावार्थ—यदि जन्मसमय चन्द्रमा अष्टम भाव में हो तो वह

मनुष्य रोगी, बेकार घूमनेवाला, क्रोधी, देश को त्याग करनेवाला और निर्दय (दयारहित) होता है ॥ २२ ॥

नवमभावगतचन्द्रफलम्—

नसीबखानगः कमर्मुईशसंज्ञकं नरम् ।
मुतम्मविल्च आमिलं सिकम्युकं करोति वै ॥ २३ ॥

भावार्थ—यदि चन्द्रमा नसीबखाना (नवम भाव) में हो तो वह मनुष्य बड़े तेजवाला और अत्यन्त धनी, आमिल (ईश्वर को जाननेवाला) और सवारियों पर चलनेवाला होता है ॥ २३ ॥

दशमभावस्थचन्द्रफलम्—

कमर्यदा गृहाश्रितो हि हम्जवारकं नरम् ।
तवङ्गरं च कामिलं करोति वै च साबिरम् ॥ २४ ॥

भावार्थ—यदि चन्द्रमा दशमभाव में हो तो मनुष्य अपने कुटुम्ब (परिवार) का पालन करनेवाला, पिता का भक्त, विशेष धनी, उत्तम विद्वान्, शान्त प्रकृति और सन्तोषी होता है ॥ २४ ॥

एकादशभावस्थचन्द्रफलम्—

धनाधिपश्च खूबरू सखी सुबुद्धिपुङ्गरः ।
शिरींसखुन् विदूषको भवेद्यदा कमर्भवे ॥ २५ ॥

भावार्थ—यदि चन्द्रमा एकादश भाव में हो तो वह मनुष्य अत्यन्त धनवान्, विशेष रूपवान्, सखी (दाता), बुद्धिमान्, मधुर वचन बोलनेवाला, निर्दोष काम करनेवाला होता है ॥ २५ ॥

द्वादशभावस्थचन्द्रफलम्—

व्ययालये कमर्यदा भवेत्किरीह चश्मखन् ।
विरोधनश्च खिश्मनाप्यकीर्तिमान् हि उष्ट्रघः ॥२६॥

भावार्थ—यदि चन्द्रमा जन्मलग्न से द्वादश भाव में हो तो वह मनुष्य आँख में विकारवाला, लोगों से विरोध करनेवाला, व्यर्थ धन

खर्च करने वाला, अपकीर्ति (कुकर्म) करनेवाला, और दुष्ट स्वभाव वाला होता है ॥ २६ ॥

इति चन्द्रफलम् ।

अथ लग्नस्थमङ्गलफलम्—

यदि भवति मिरीखो लग्नगः खिश्मनाकस्या-
द्रुधिरप्रभवरोगैः पीडितो मुफ्लिसश्च ।
सकलजनविरोधी हासिलो लागरो ना
जनुषि खलु वियोगी दारपुत्रैर्हमेशः ॥२७॥

भावार्थ—यदि मिरीख (मङ्गल) लग्न में हो तो वह मनुष्य झगड़ा करने वाला, रक्तविकार रोग से पीड़ित, बेकार बैठने वाला, सबका विरोधी, शरीर से दुबला और सर्वदा स्त्री पुत्र से पृथक् रहने वाला होता है ॥२७॥

द्वितीयभावस्थमङ्गलफलम्—

यदि भवति मिरीखश्चश्मखाने बेहोशः
सुतधनसुखदारैर्वर्जितः शूरगः स्यात् ।
नसनयमुतफक्किर्हीनशक्तिर्वेदर्दः
खलजनसमबुद्धिर्मानवः कर्जदारः ॥२८॥

भावार्थ—यदि मङ्गल द्वितीय भाव में हो तो वह मनुष्य सर्वदा बेहोश, स्त्री पुत्र धन और सुख से रहित, शूर (लड़ने में बहादुर), सदा चिन्तायुक्त, कुरूप, शक्तिहीन, बेदर्द (निर्दय), दुष्ट की तरह बुद्धि वाला और कर्जदार (ऋण लेनेवाला) होता है ॥२८॥

तृतीयभावस्थमङ्गलफलम्—

जरशुतुरजवाहिर्रत्नतम्बूकनातैः
सहजविमतिरोगैः संयुतोऽसंयुतश्च ।

यदि भवति मिरीखः खूबरो वा मुखैइल्-
वजरफिवरसंज्ञः स्याद्विरादग्रृहे ना ॥२९॥

भावार्थ—यदि मङ्गल विरादर गृह (तृतीय भाव) में हो तो वह मनुष्य धन, ऊँट, जवाहिरात, रत्न, तम्बू, कनात आदि से युक्त रहता है, और रोग आदि से रहित होता है। तथा पराक्रमी, रूपवान् और धन की आमदनी करने वाला होता है ॥२९॥

चतुर्थभावस्थमङ्गलफलम्—

पदकरजविराड्यै नो तनूत्थं सुखं च
समरधरधरायां धैर्ययुग्धी धनीनः ।
खरयुशनक चेदर्द कर्जमन्दो हमेशः
प्रभवति च मिरीखो दोस्तखाने नरश्चेत् ॥३०॥

भावार्थ—यदि मङ्गल दोस्तखाना (चतुर्थ भाव) में हो तो वह मनुष्य लम्बा हाथ पाँव वाला, शरीर सुख से रहित, रणभूमि में धैर्य रखनेवाला, धनहीन, मजबूत देहवाला, निर्दय और सदा ऋण लेनेवाला होता है ॥३०॥

पञ्चमभावस्थमङ्गलफलम्—

कमफहमतदाना अक्लखाने मिरीखः
पिसरजर वजीरन्नेस्तदरखानये स्यात् ।
अनिलकफजरोगैर्व्याकुलो बेमुरौवत्
गुसवर बद-अक्लश्चोदरव्याधियुक् स्यात् ॥३१॥

भावार्थ—यदि मङ्गल पञ्चमभाव में हो तो वह मनुष्य कम बोलने वाला, निर्बुद्धि, पुत्र, धन और अच्छी नौकरी के सुख से रहित, वायु और कफ रोग से व्याकुल, बेमुरौवत (शीलहीन) क्रोधी और उदर रोग से युक्त होता है ॥३१॥

षष्ठभावस्थमङ्गलफलम्—

रिपुजनपरिहन्ता खूबरो हम्जवान् स्या-
ज्ञशनजरजलालैर्युङ्नहेवानजातः ।
यदि भवति मिरीखो मर्जखाने कदर्दान्
कृतकुलजननोखो मातृपक्षे कुठारः ॥३२॥

भावार्थ—यदि मङ्गल षष्ठभाव में हो तो वह मनुष्य शत्रुओं को जीतनेवाला, सुन्दर रूपवाला, ऐव, आनन्द, धन आदि सुख से युक्त, लोगों का कदर करनेवाला, अपने कुल में श्रेष्ठ और मातामह के कुल में कुठार सदृश (नाश करने वाला) होता है ॥३२॥

सप्तमभावस्थमङ्गलफलम्—

कमशहबत किरयांवश्चबेरो नहि स्या-
न्निहिल जुलुमजङ्गैर्युङ् चाऽल्पः खमाणे ।
तनुधनगमवेश्मस्त्री-सुखैर्वर्जिताऽङ्गो
भवति यदि जलादुल्कल्कको जन्मकाले ॥३३॥

भावार्थ—जन्मसमय यदि मङ्गल सप्तमभाव में हो तो वह मनुष्य कम सोहबत (स्त्री से संयोग) करनेवाला, सदा तकलीफ में रहनेवाला, निहायत जुल्म और लड़ाई करनेवाला होता है। और उसको धन, यात्रा, घर तथा स्त्रीका सुख थोड़ा होता है ॥३३॥

अष्टमभावस्थमङ्गलफलम्—

यदि भवति जलादुल्कल्कको मौतखाने
सततमहितभाषी गुह्यरुक्स्त्रीसुखोनः ।
मुतफ़किरबदामे जौहरी सोथ जख्मी
कमफ़हममनः स्याल्लागरोऽसृग्विकारैः ॥३४॥

भावार्थ—यदि मङ्गल अष्टमभाव में हो तो वह मनुष्य सर्वदा अनुचित बोलने वाला, गुप्त रोगवाला, स्त्रीसुख से रहित, चिन्तायुक्त,

जौहरी (रत्न परखनेवाला), शरीर में जख्म वाला, बुद्धिहीन और शोणित के विकार से दुर्बल शरीर वाला होता है ॥३४॥

नवमभावस्थमङ्गलफलम्—

नरपतिकुलमान्यः संलभो वन्दनादौ
भवति यदि जलादुल्कल्कको बख्तखाने ।
परयुवतिरतः स्यान्मानवो भाग्यवान् वै
पुरजसुखसुसिद्धौ हिर्जगर्दश्च लेखः ॥३५॥

भावार्थ—यदि मङ्गल (बख्तखाना) नवमभाव में हो तो वह मनुष्य राजकुल के मान्य और सब से वन्दनीय, परस्त्री में निरत, भाग्यवान्, ग्रामों में सुख पानेवाला तथा बेकार घूमनेवाला होता है ॥३५॥

दशमभावस्थमङ्गलफलम्—

पुरफितरितसंज्ञः काबिलो नेककिर्दा-
नेयसमरिह लोके पूजितः साहसी च ।
मिहिरजरजलालङ्कारजेवर्युतो ना
भवति यदि मिरीखो शाहखाने सखी स्यात् ॥३६॥

भावार्थ—यदि मङ्गल शाहखाना (दशमभाव) में हो तो वह मनुष्य धनवान्, होशियार, किफायती, लोगों से पूजित, साहसी, धन, वस्त्र, रत्नभूषणों से युक्त तथा दानी होता है ॥३६॥

एकादशभावस्थमङ्गलफलम्—

जरमखमलमर्ज्योजर्कशीसाहिबीभि-
स्तुरगरथपदात्यैर्युग्जनश्चारिहीनः ।
यदि भवति जलादुल्कल्कको याफ्तिखाने
मदनसमरदक्षः पण्डितः सत्यगन्ता ॥३७॥

भावार्थ—यदि मङ्गल एकादशभाव में हो तो वह जरी, रेशमी, मखमली, जर्कशी आदि वस्त्रों से युक्त और साहिबी रखनेवाला तथा

हाथी, घोड़ा, गाड़ी, नौकर आदि रखनेवाला होता है। और शत्रुरहित, स्त्रियों के साथ केलि में समर्थ, पण्डित और सत्य बोलनेवाला होता है॥

द्वादशभावस्थमङ्गलफलम्—

यदि भवति मिरीखः खर्चखाने गतश्च
स्वजनहृदयभेत्ता कर्कशैर्ना वचोभिः।
महमहवजजुल्मी साहिदोबेधनः प्राग्
जठरदहनदर्पो तुहँमेशः परेशान् ॥३८॥

भावार्थ—यदि मङ्गल द्वादशभाव में हो तो वह मनुष्य अपने कुटुम्बों को कठोर वचन कहकर दुःख देनेवाला, विशेष जुल्म (उत्पात) करनेवाला, क्रोधी, और सदा परेशान रहता है ॥३८॥

इति भौमफलम्।

अथ लग्नस्थबुधफलम्—

साहब् सवारो जितखूबरोमा तुतारदः साहबहिम्मतश्च।
ताले भवेच्चेत्सततं विनोतो दानी चिरं चात्मजसौख्ययुक् स्यात् ॥

भावार्थ—यदि बुध जन्मलग्न में हो तो वह मनुष्य हाकिम, सवार, सुन्दर स्वरूपवाला, दयालु, नामी, दान करनेवाला और पुत्र-सुख से युक्त होता है ॥३९॥

द्वितीयभावस्थबुधफलम्—

शीरींसखुन् दानिशवर्गनीचतवङ्गरः स्याद्यदि चश्मखाने।
उतारदो ना स्वजनानुरक्तो भवेद्विनीतः शुभकृत्यमेति ॥४०॥

भावार्थ—यदि जन्म समय उतारद (बुध), चश्म (द्वितीय भाव) में हो तो वह मनुष्य मधुर वचन बोलनेवाला, दानियों में नीच (अर्थात् थोड़ा दान करने वाला), अपने कुटुम्बों में प्रीति रखनेवाला, और विनीत, शुभ कृत करने वाला होता है ॥४०॥

तृतीयभावस्थबुधफलम्—

खुशौवती साहबदर्दसंज्ञः प्रभूतिमित्रप्रमदाप्रियश्च ।
उतारदश्चेन्मग्नरोयशीयुंखोनो भवेन्नाखुशरो हमेशः ॥४१॥

भावार्थ—यदि बुध तृतीय भाव में हो तो वह मनुष्य शीलवान्, अत्यन्त दयालु, ऐश्वर्य, मित्र, स्त्रीजनों में प्रीति रखने वाला और सर्वदा चित्त प्रसन्न रखनेवाला होता है ॥४१॥

चतुर्थभावस्थबुधफलम्—

पुष्टोऽनपत्योऽथ स वै यथेच्छो दानीश्वरो गीतप्रियः सखी च ।
उतारदः स्याद्यदि दोस्तखाने शीरींसखुन्कार्यगते मृपी च ॥४२॥

भावार्थ—यदि बुध दोस्तखाना (चतुर्थ भाव) में हो तो वह मनुष्य शरीर से पुष्ट किन्तु सन्तान रहित होता है और स्वतन्त्र, दानी, गीत का प्रिय, उदार, मधुर वचन बोलनेवाला, तथा आलसी होता है ॥४२॥

पञ्चमभावस्थबुधफलम्—

सुतान्वितः सुर्रफितद्भवेन्ना युतारदः स्याद्यदि अक्लखाने ।
दानाग्रणीः सान्निरसंज्ञकश्च शिगूफुरूसाहबहिम्मतश्च ॥४३॥

भावार्थ—यदि बुध पञ्चम भाव में हो तो वह आदमी पुत्रवान्, धनवान्, बुद्धिमान्, दानियों में श्रेष्ठ, सन्तोष रखनेवाला, सुन्द रूपवाला और हिम्मत वाला होता है ॥४३॥

षष्ठभावस्थबुधफलम्—

बेरो नरः स्यान्नसिआ विधानो बदूखुल्ककः काहिलजाहिलोऽपि ।
बंदूमकाने हि भवेद्बीरुल्कल्को यदा मांधविपक्षयुक् चेत् ॥

भावार्थ—यदि जन्मसमय बुध षष्ठ भाव में हो तो वह मनुष्य सर्वदा दुःखी, मूर्ख, कार्य करनेमें आलसी, और दुष्ट स्वभाववाला होता है ॥४४॥

सप्तमभावस्थबुधफलम्—

वालेवरः सत्यवचा मुसाहिब् परोपकारी जनखूबरो च ।

उतारदः स्याद्यदि सप्तमे च भवेन्नरः काबिल वा मुरौवतः ॥४५॥

भावार्थ—जिसके सप्तम भाव में बुध हो तो वह मनुष्य अति धनी, सत्य बोलनेवाला, राजमन्त्री, परोपकारी, सुन्दर, बुद्धिमान् और शीलवान् होता है ॥४५॥

अष्टमभावस्थबुधफलम्—

उमर्दराजः सुतरां सगर्वमेकंपुरं पार्थिवलब्धचित्तम् ।
वेरो विधानं हि नरं प्रकुर्यादुतारदो मार्गमकानगश्चेत् ॥४६॥

भावार्थ—जिसके अष्टमभाव में बुध हो वह मनुष्य बहुत आयुर्दाय वाला, गौरव से युक्त, एक नगर का मालिक, राजा से धनलाभ करने वाला और दूसरे से लड़ाई करने वाला होता है ॥४६॥

नवमभावस्थबुधफलम्—

दानीश्वरः सत्यगुलुरुपेतः खुश्रो गनी धर्मपरस्तवङ्गरः ।
यदा दबीरुल्कलको नशीबखाने भवेत्स प्रथितः शुभङ्करः ॥४७॥

भावार्थ—जिसके नवमभाव में बुध हो वह मनुष्य दाताओं में श्रेष्ठ, सत्य और गुणों से युक्त, सर्वदा सुखी रहनेवाला, बड़ा आदमी, धर्म में तत्पर, विख्यात और शुभ काम करनेवाला होता है ॥४७॥

दशमभावस्थबुधफलम्—

साहब् जलालो मुतमौवलस्यान्नरेन्द्रमुख्यः शुभकर्म कृन्मा ।
शीरींसखुन्साहबदद्संज्ञश्चोत्तारदश्चेत्खलु शाहखाने ॥४८॥

भावार्थ—बुध यदि दशमभाव में हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रतापी, अत्यन्त धनवान् , राजाओं में श्रेष्ठ, शुभकर्म करनेवाला, मधुर वचन बोलनेवाला और दयावान् होता है ॥४८॥

एकादशभावस्थबुधफलम्—

तवङ्गरश्चात्मजसौख्ययुक्तस्यादानाग्रणीर्भूपप्रियस्सिपाही ।
सर्दारकः पाकदिलो दबीरुल्कलको यदा याप्तिमकानगः स्यात् ॥

भावार्थ—यदि बुध एकादश भाव में हो तो मनुष्य धनवान्, तेजस्वी, पुत्र-सुख से युक्त, दानियों में श्रेष्ठ, राजा का परमप्रिय सिपाही, या सरदार और साफ़ दिलवाला होता है ॥४९॥

द्वादशभावस्थबुधफलम्—

नापाकजनैश्चारुगुणैरुपेतो वेतालकः कम्शद्वर्वदर्दः ।
उतारदः स्याद्यदि खर्चखाने भवेद्धिरीशोपि च गर्दवर्दः ॥५०॥

भावार्थ—यदि द्वादशभाव में बुध हो तो वह मनुष्य नीच जनों के साथ रह कर नीच हो के गुणों से युक्त होता है। और किसी काम को सिलसिला से नहीं करनेवाला, किसी बात को बर्दाश्त न करनेवाला, अवदा दुःखी और बेकार घूमनेवाला होता है ॥५०॥

इति बुधफलं समाप्तम् ।

—:०:—

अथ लग्नस्थगुरुफलम्—

मुश्तरी यदि भवेदिह ताले साहिबः खुशदिलो मनुजः स्यात् ।
आमिलः पुरुसखुन् सिरदारः फारसी ह्यकविरो महबूबः ॥

भावार्थ—जिसके जन्म लग्न में बृहस्पति हो वह मनुष्य दूसरों के ऊपर हुकुम चलानेवाला, प्रसन्न चित्त, ईश्वर का भक्त, सुखी, श्रेष्ठ, काव्य जाननेवाला और तेजस्वी होता है ॥५१॥

द्वितीयभावस्थगुरुफलम्—

मुश्तरी यदि भवेज्जरखाने बुज़ुर्गः परमपुण्य मतिस्स्यात् ।
कामिलः कनकसूनुयुतश्च खूबरो हि मनुजो जरदारः ॥५२॥

भावार्थ—यदि दूसरे स्थान में बृहस्पति हो तो वह चतुर, पुण्यकार्य में बुद्धि रखनेवाला, कामिल (सिद्ध पुरुष) सुवर्ण आदि धन और पुत्रों से युक्त, अत्यन्त सुन्दर और सुखी होता है ॥५२॥

तृतीयभावस्थगुरुफलम्—

गाफिलो बहुपराक्रमयुक् स्यान् मानवः परुषवाक् च बखीलः ।
पालको भवति श्रेष्ठजनानां मुश्तरी यदि बिरादरखाने ॥

भावार्थ—यदि तृतीय भाव में बृहस्पति हो तो वह मनुष्य गाफिल (अनवधान) अर्थात् किसी कार्य में सावधान नहीं हो, बहुत पराक्रम से युक्त हो, कठोर वचन बोलनेवाला, कृपण, परञ्च अच्छे आदमी का पालन करनेवाला होता है ॥५३॥

चतुर्थभावस्थगुरुफलम्—

अश्वजर्जरकशीरथफीलैर्युग्जनः प्रियतमः खलु राज्ञः ।
मुश्तरी यदि भवेद्धि चहारुम्खानये सकलसौख्ययुतः स्यात् ॥

भावार्थ—जिसके चतुर्थ भाव में बृहस्पति हो वह हाथी, घोड़ा, रथ (गाड़ी), और जरीदार कपड़े से युक्त हो, राजा का प्रिय और सब प्रकार के सुख से युक्त होता है ॥५४॥

पञ्चमभावस्थगुरुफलम्—

पण्डितः पुरुतरद्दुद आर्यः पुत्रपौत्रसहितो महबूबः ।
मुश्तरी यदि भवेत्फरजन्दस्यालये न मनुजो जरदारः ॥५५॥

भावार्थ—यदि बृहस्पति पञ्चमभाव में हो तो वह मनुष्य पण्डित होता है किन्तु अनेक चिन्ताओं से युक्त रहता है और वह लोगों में माननीय, पुत्र पौत्र आदि से युक्त और धनवान् होता है ॥५५॥

षष्ठभावस्थगुरुफलम्—

काहिलश्च बहुरोगयुतश्च मानवो बदसखुन्बदशिक्लः ।
मुश्तरी यदि भवेद्दुखाने मातुलादि भवसौख्यविहीनः ॥५६॥

भावार्थ—यदि बृहस्पति षष्ठभाव में हो तो वह मनुष्य आलसी, बहुत रोगों से युक्त, कटुवचन बोलनेवाला, बदसूरत, तथा मातृकुल के सुखों से रहित होता है ॥५६॥

सप्तमभावस्थगुरुफलम्—

फाज़िलः सुखयुतः सुविनीतो हम्जवाक् च रमणीसुखयुक्तः ।
फारसश्च चतुरः किल ना स्यात् मुश्तरी यदि भवेज्जनखाने ॥५७॥

भावार्थ—जिसके सप्तमभाव में बृहस्पति हो वह अनेक विद्या को जाननेवाला, सब प्रकार के सुख से युक्त, नम्रस्वभाववाला, सफलवचन वाला, स्त्री सुख से युक्त, शत्रु को जीतनेवाला और परम चतुर होता है ॥

अष्टमभावस्थगुरुफलम्—

बेदिलश्च परदेशरतश्च जाहिलः खलु नरः सगदश्च ।
मुश्तरी यदि हि हस्तमखाने गुस्वरः स किल भवेज्जनमस्तः ॥५८॥

भावार्थ—यदि बृहस्पति अष्टमभाव में हो तो वह मनुष्य निर्दय, परदेशी, मूर्ख, रोगी, क्रोधी और झगड़ालू होता है ॥५८॥

नवमभावस्थगुरुफलम्—

इज्ज़्ते च खुशपीरजवांश्च खूबरो बहुसुखी च सुशीरः ।
आमिलश्च यदि यख्तमखाने मुश्तरी प्रविभवेत्खलु यस्य ॥५९॥

भावार्थ—जिसके नवमभाव में बृहस्पति हो वह मनुष्य उच्चश्रेणी वाला, भाग्यवान्, खूबसूरत, अत्यन्तसुखी, यशस्वी, तथा ईश्वरभक्त होता है॥

दशमभावस्थगुरुफलम्—

पालकीजलजवाहिरफीलः संयुतो विविधवस्त्रविशालैः ।
मुश्तरी भवति शाहमकाने साहबः खलु नरो नसरः स्यात् ॥६०॥

भावार्थ—यदि बृहस्पति दशवें भाव में हो तो वह मनुष्य, पालकी, नाव, हाथी आदि सवारी से युक्त हो, अनेक प्रकार के रत्न और वस्त्र रखनेवाला हो, बहुत आदमियों का मालिक और श्रेष्ठ होता है ॥६०॥

एकादशभावस्थगुरुफलम्—

साबिरः शुभतनुर्जरदारः फारशो बहुपराक्रमयुक् स्यात् ।
काबिलश्च यदि याफ्तमकाने मुश्तरी प्रविभवेत्खुशरो स्यात् ॥६१॥

भावार्थ—बृहस्पति यदि एकादशभाव में हो तो वह मनुष्य सन्तोषी, सुन्दरशरीरवाला, धनवान्, विद्वान्, पराक्रमी, होशियार और खूबसूरत होता है ॥६१॥

अथ द्वादशभावस्थबृहस्पतिफलम्—

मुफ्लिसः कमफहम् गतलज्जा बदसखुंश्च रणभूतलचिन्तः ।
काहिलश्च यदि खर्चमकाने मुश्तरी भवति ना बदफैलः ॥६२॥

भावार्थ—यदि द्वादशभाव में बृहस्पति हो तो वह मनुष्य, बेकार रहने वाला, कम बोलने वाला, निर्लज्ज, कटुवचन बोलने वाला, लड़ाई झगड़ा की चिन्ता रखने वाला, आलसी और व्यर्थ खर्च करने वाला होता है ॥६२॥

इति बृहस्पतिफलं समाप्तम् ।

—०-०:०-०—

अथ लग्नस्थशुक्रफलम्—

अव्वलखाने जोहा महबूबं मुकरबं नृपतिम् ।
दानिश्मन्दं मनुजं जरदारं जनखूबरो प्रकुरुते ॥६३॥

भावार्थ—यदि जन्मलग्न में शुक्र हो तो वह मनुष्य तेजस्वी, प्रतापी, राजा, दानकरनेवाला, बहुत धन रखनेवाला और खूबसूरत होता है ।६३।

द्वितीयभावस्थशुक्रफलम्—

शीरींसुखुन् मनुष्यं जरजेवर्जर्कशीशालैः ।
यकूमिहरो जरखाने जोहा कुरुते च सद्धजं दक्षम् ॥६४॥

भावाथ—यदि द्वितीयभाव में शुक्र हो तो वह मनुष्य मधुर वचन बोलनेवाला, रत्न, भूषण, जरीदार वस्त्र शाल दोशाला से युक्त और उत्तम उत्तम काम करने में तत्पर रहता है ॥६४॥

तृतीयभावस्थशुक्रफलम्—

जोहा भवति बिरादरखाने चेन्मानवो जातः ।
जोरावरो हरीशः सालस्यः सानुजः साश्वः ॥६५॥

भावार्थ—यदि शुक्र तृतीय भाव में हो तो वह मनुष्य सिंह के सदृश बलवान् और आलसी और छोटे भाइयों से युक्त होता है ॥६५॥

चतुर्थभावस्थशुक्रफलम्—

ऐयाशो मालदारो नेकोकारश्च फारसश्चेत्स्यात् ।
जोहरा दोस्तमकाने भवति मनुष्यः प्रियंवदश्चाढ्यः ॥६६॥

भावार्थ—यदि शुक्र चतुर्थ भाव में हो तो वह मनुष्य व्यभिचारी, अच्छे काम करने वाला (यानी उपकारी), पण्डित और मधुर वचन बोलने वाला होता है ॥६६॥

पञ्चमभावस्थशुक्रफलम्—

दानीश्वरो मनुष्यः सुतधनधान्यैश्च संकुलो यस्य ।
जोहा पञ्चमखाने भवति यदा हि महीपतेः प्रीतिः ॥६७॥

भावार्थ—जिसके पञ्चम भाव में जोहरा (शुक्र) हो वह मनुष्य दानियों में श्रेष्ठ, पुत्र और सम्पत्ति से युक्त और राजा का प्रिय होता है ॥

षष्ठभावस्थशुक्रफलम्—

यारोनः कम्सहद् बेदर्दो जाहिलो जातः ।
खलु जोहरा हि दुश्मनूखाने वै बेदिलो भवति ॥६८॥

भावार्थ—यदि शुक्र दुश्मन खाना (षष्ठभाव) में हो तो वह मनुष्य मित्र से रहित, कम सोहवत् (किसी की बात को न सहने वाला), निर्दय, मूर्ख, और बेहूदा होता है ॥६८॥

सप्तमभावस्थशुक्रफलम्—

साहबदर्दः कुशलः सकलकलासु फारसो ना स्यात् ।
जोहा हफ्तमखाने स्त्रीजनचिन्तासुरञ्जको भवति ॥६९॥

भावार्थ—यदि सप्तम भाव में शुक्र हो तो वह मनुष्य अत्यन्त दयालु, सब कामों में कुशल, चतुर स्त्री को चिन्ता करने वाला और क्रोधी होता है ॥६९॥

अष्टमभावस्थशुक्रफलम्—

मगरूरो बदखुल्कः स्त्रीधनसौख्यैश्च वर्जितो मनुजः ।
हत्तुमखाने जोहरा भवति वितृप्तं मनो न संग्रामे ॥७०॥

भावार्थ—यदि शुक्र अष्टम भाव में हो तो वह मनुष्य अभिमानी, बहुवादी, स्त्री, धन, और सुख से रहित, तथा उसका मन कभी लड़ाई से तुष्ट नहीं होता है ॥७०॥

नवमभावस्थशुक्रफलम्—

नेकीकारः सुभगः खुशरो दानी च मानवो जोहरा ।
बख्तमकाने मुर्ताज् नशरश्च मज्लिसी भवति स इति ॥७१॥

भावार्थ—यदि शुक्र नवम भाव में हो तो वह पुरुष धर्म कार्य करनेवाला, सुन्दर, सदा प्रसन्न, दानी, धनी, स्वतन्त्र और सभा करनेवाला होता है ॥७१॥

दशमभावस्थशुक्रफलम्—

दर्राकोजरदारः पितृगुरुभक्तश्च काबिलो मनुजः ।
जोहा शाहमकाने भवति मुशीरश्च साहबो वा स्यात् ॥७२॥

भावार्थ—जिसके दशम भाव में शुक्र हो वह मनुष्य बड़ा ढीठ, धनी, पिता और गुरुजनों का भक्त, होशियार, राजा अथवा राजा के तुल्य होता है ॥७२॥

एकादशभावस्थशुक्रफलम्—

जरदारं महबूबं सिर्दारं वा मुरौवतं मनुजम् ।
याफ्तिमकाने जोहरा मईशं पुरुदतं कुरुते ॥७३॥

भावार्थ—यदि शुक्र एकादश भाव में हो तो वह मनुष्य धनी, तेजस्वी, सरदार, शीलवान्, राजा अथवा तत्सदृश होता है ॥ ७३ ॥

द्वादशभावस्थशुक्रफलम्—

साहबखर्चो बदकार् कमसहश्च मानवो ह्युदितः ।
बदअक्कः किल जोहरा खर्चमकाने हि गुस्वरो भवति ॥७४॥

भावार्थ—जिसके द्वादश भाव में शुक्र हो वह मनुष्य बहुत खर्च करने वाला, खराब काम करने वाला, किसी की बात न सहनेवाला, निर्बुद्धि और क्रोधी होता है ॥ ७४ ॥

इति शुक्रफलं समाप्तम्

—:०:—

अथ लग्नस्थशनिफलम्—

ताले यदि स्याज्जुहलो बदअक्लश्च लागरो मनुजः ।
शठकम्नुरुं बेदिलः वाममतिपूर्णः प्रभुर्भवति ॥७५॥

भावार्थ—यदि जुहल (शनि) ताले (लग्न) में हो तो वह मनुष्य निर्बुद्धि, दुबला, दुष्ट, क्रूर, निर्दय, कुटिल बुद्धि और मालिक होता है ॥

द्वितीयभावस्थशनिफलम्—

यावागो बदूहालः कोतोदस्तश्च गुस्त्ररो जोहलः ।
जरखाने यदि मनुजो नाढ्यः परदेशगश्चापि ॥ ७६ ॥

भावार्थ—यदि शनैश्चर द्वितीय भाव में हो तो वह मनुष्य सर्वदा बक रहनेवाला, खराब हालत वाला, क्रोधी, निर्धन और परदेश में रहनेवाला होता है ॥ ७६ ॥

तृतीयभावस्थशनिफलम्—

जोरावरो यशीलः खुशदाना च मानवः सभ्यः ।
अनुचरवृन्दसमेतो भवति यदा वै बिरादरे जोहलः ॥७७॥

भावार्थ—यदि तृतीय भाव में शनि हो तो वह मनुष्य पहलवान, यशस्वी, प्रसन्न चित्त वाला, सभाचतुर और नौकरों से युक्त होता है ॥

चतुर्थभावस्थशनिफलम्—

मुतफक्किरो बेहोशः परितप्तो मानसो जोहलः ।
मादरखाने यदि स्यात् कमजोरश्च लागरो भवति ॥७८॥

भावार्थ—यदि चतुर्थ भाव में शनि हो तो वह मनुष्य चिन्ता से

युक्त, बेहोश, मानसी व्यथा वाला, निबल और दुर्बल शरीर वाला होता है ॥७८॥

पञ्चमभावस्थशनिफलम्—

बदअक्लो मुरफकिरः सुतसुखरहितश्च काहिलो मनुजः ।
जोह्लः पञ्चुमखाने कोतहदेहश्च जाहिलो भवति ॥७९॥

भावार्थ—यदि पञ्चम भाव में शनि हो तो वह मनुष्य निर्बुद्धि, चिन्तायुक्त, पुत्र सुख से रहित, आलसी, छोटा शरीर वाला और मूर्ख होता है ॥ ७९ ॥

षष्ठभावस्थशनिफलम्—

दानीश्वरं जलीलं जनयति मनुजं मुकर्रमं नृपतिम् ।
निर्जितवैरिसमूहं दुश्मनखाने स्थितो जोह्लः ॥ ८० ॥

भावार्थ—यदि षष्ठ भाव में शनि हो तो वह मनुष्य दानियों में श्रेष्ठ, इसलिए जलील रहता है, और वह राजा अथवा राजा सदृश होता है तथा शत्रुओं को जीतनेवाला होता है ॥ ८० ॥

सप्तमभावस्थशनिफलम्—

बदरो जनः कृशाङ्गः कम्फहमश्च मानवो हिर्जः ।
जानो वा स्याज्जोही हफ्तुमखाने यदा भवति ॥ ८१ ॥

भावार्थ—यदि सप्तम भाव में शनि हो तो वह पुरुष खराब चाल-वाला, दुर्बल देहवाला, थोड़ा बोलनेवाला, निर्बुद्धि और पराधीन होता है ॥ ८१ ॥

अष्टमभावस्थशनिफलम्—

बीमारश्च हरीशो दगालबाजश्च दोजखी मनुजः ।
जोह्लहस्तुमखाने भवति बखीलः कृपालसो भीरुः ॥८२॥

भावार्थ—यदि अष्टम भाव में शनि हो तो वह मनुष्य रोगी, आलसी, दगाबाज, पेटू, कृपण, दयालु और डरपोक होता है ॥८२॥

नवमभावस्थशनिफलम्—

बख्तबुलन्दः श्रीमान् शीरींसखुनश्च मानवो यदि वै ।
जोह्लो बख्तमकाने बेतालश्च हि कृपालुरपि भवति ॥८३॥

भावार्थ—यदि नवम भाव में शनि हो तो उस मनुष्य का समय बहुत अच्छा होता है, और वह लक्ष्मीवान्, मधुर वचन बोलनेवाला, सुखी और दयालु होता है ॥ ८३ ॥

दशमभावस्थशनिफलम्—

शाहमकाने जोहलच्चेषु दशाफ्ते च मानवो शाहः ।
अथवा भवेन्मुशीरः खुशखुल्कः सुकृती गनी नेही ॥८४॥

भावार्थ—यदि दशम भाव में शनि हो तो वह मनुष्य राजा अथवा राजमन्त्री, सर्वदा खुशी, पुण्यकार्य करनेवाला, माननीय और स्नेह करनेवाला होता है ॥८४॥

एकादशभावस्थशनिफलम्—

साहबदर्दो नेकः शीरींसखुनस्तवङ्गरो ना स्यात् ।
यासमकाने जोहल ईशः साबिरो रिपुहन्ता ॥८५॥

भावार्थ—यदि शनि एकादश भाव में हो तो वह मनुष्य बड़े दयालु, उपकार करनेवाला, मधुर वचन बोलने वाला, दुबला, सन्तोषी और शत्रुओं को जीतने वाला होता है ॥८५॥

द्वादशभावस्थशनिफलम्—

तँगहालो बदफेलः पापासक्तश्च मुफ्लिसो मनुजः ।
जोह्लः खर्चमकाने भवति हरीशः कृपालुरेव स्यात् ॥८६॥

भावार्थ—यदि द्वादश भाव में शनि हो तो वह खर्च करने से तङ्ग रहता है, व्यर्थ खर्चा करनेवाला, पापकर्म में आसक्त, किसी काम को न देखने वाला, बलवान और दयालु होता है ॥८६॥

इति शनिफलं समाप्तम् ।

अथ लग्नस्थराहुफलम्—

अव्वलखाने यदा रासः खिस्मनाकश्च काहिलः ।
मनुजः स्वार्थकता स्याद्बद्वेद्वेरोतु जाहिलः ॥८७॥

भावार्थ—जिसके लग्न में राहु हो वह मनुष्य दुःखी, आलसी, स्वार्थी, बदसूरत और मूर्ख होता है ॥८७॥

द्वितीयभावस्थराहुफलम्—

कुजीवाहासिद्रासो मालखाने च मुफ्लिसम् ।
करोति मनुजं वाऽन्यदेशे धनसमन्वितम् ॥८८॥

भावार्थ—यदि राहु द्वितीय भाव में हो तो स्वार्थी और वह अपने देश में बेकार रहकर दुःखी रहता है, यदि परदेश जाय तो धनी होता है ॥८८॥

तृतीयभावस्थराहुफलम्—

पाकः शाहबलः स्याद्वै नेकनामी गनी सखी ।
शीयुम्खाने यदा रासः प्रभवेन्मनुजो धनी ॥८९॥

भावार्थ—यदि राहु तृतीय भाव में हो तो वह मनुष्य पवित्र, राजबल से युक्त, सुयशवाला, प्रतिष्ठित, धनी, और दानी होता है ॥८९॥

चतुर्थभावस्थराहुफलम्—

रासश्चेद्दोस्तखाने स्यात् परेशानो मुसाफिरः ।
नादानोऽपि च वादी च सौख्यहीनो विपक्षकः ॥९०॥

भावार्थ—यदि राहु चतुर्थ भाव में हो तो मनुष्य सर्वदा दुःखी, परदेश में रहनेवाला, मूर्ख, विवादी, सुखहीन होता है और उसका हित कोई नहीं होता है ॥९०॥

पञ्चमभावस्थराहुफलम्—

पिसरखाने स्थितो रासः पुत्रसौख्यविवर्जितम् ।
बेहोशं दर्दशिकमं नादानं कुरुते नरम् ॥९१॥

भावार्थ—यदि पञ्चम भाव में राहु हो तो वह मनुष्य पुत्रसुख से रहित, वेहोश, शरीर में पीड़ा वाला और मूर्ख होता है ॥९१॥

षष्ठभावस्थराहुफलम्—

म्लेच्छावनीशाद्द्रव्याप्तिर्दिलं च साहवं नरम् ।
बदूखानास्थितो रासः करोति रिपुसंक्षयम् ॥९२॥

भावार्थ—यदि षष्ठ भाव में राहु हो तो उस मनुष्य को यवन राजा आदि से धन लाभ होता है और वह बड़ा अमार होता है और शत्रुओं का नाश करता है ॥९२॥

सप्तमभावस्थराहुफलम्—

हिर्जगर्दश्च बेतालो गुस्तरो बदूजनो भवेत् ।
हफ्तमूखाने यदा रासः कलही मनुजस्तदा ॥९३॥

भावार्थ—यदि सप्तमभाव में राहु हो तो वह मनुष्य पागल, बेकार घूमने वाला, क्रोधी, बदचलन और दूसरों से झगड़ा करनेवाला होता है।

अष्टमभावस्थराहुफलम्—

हस्तमूखाने यदा रासः शरीरी स्यान्मुशाफिरः ।
वेदीनः खिश्मनाकः स्याद् बद्कारश्च मुफ्लिशः ॥९४॥

भावार्थ—जिसके अष्टमभाव में राहु हो वह शरीर से पुष्ट, परदेश में रहनेवाला, क्रोधी, खराब काम करनेवाला और दरिद्र होता है ॥९४॥

नवमभावस्थराहुफलम्—

बख्तखाने यदा रासः प्रभवेन्मनुजस्तदा ।
जवाहिर्जर्कशोयुक्तः साहबः सौख्यत्रान्नरः ॥९५॥

भावार्थ—यदि नवम भाव में राहु हो तो वह मनुष्य अनेक प्रकार के रत्न, जरीदार वस्त्रों से युक्त, बहुत आदमियों का मालिक और सुखी होता है ॥९५॥

दशमभावस्थराहुफलम्—

रासो बादशाहखाने भवेज्जोरावरो गनी ।
विपक्षपक्षरहितो मुईशः पुर्तरुद्दतः ॥९६॥

भावार्थ—यदि दशम भाव में राहु हो तो वह मनुष्य बड़ा बलवान परोपकारी, शत्रु से रहित, धनी और चिन्तित हृदयवाला होता है ॥

एकादशभावस्थराहुफलम्—

याफ्तखाने भवेद्रासो जायते नहि साहबः ।
बेकारश्च कर्जमन्दः कलही मनुजस्तदा ॥९७॥

भावार्थ—जिसके एकादश भाव में राहु हो वह मनुष्य बड़ा आदमी नहीं होता, बेकार समय बितानेवाला, कर्जा करनेवाला और झगड़ा करनेवाला होता है ॥९७॥

द्वादशभावस्थराहुफलम्—

रासः स्थितो यदा यस्य खर्चखाने भवेत्तदा ।
कलहप्रियबेकारः कर्जमन्दश्च मुफ्लिशः ॥९८॥

भावार्थ—यदि राहु द्वादशभाव में हो तो वह मनुष्य झगड़ा को प्रिय माननेवाला, बेकार समय बितानेवाला, कर्जा करनेवाला, और दरिद्र होता है ॥९८॥

इति राहुफलं समाप्तम् ।

अथ सर्वभावस्थकेतुफलम्—

यस्मिन्भावे फलं यद्धि राहोः प्रोक्तं शुभाऽशुभम् ।
तद्वदेव विजानीयात्तत्रैव शिखिनः फलम् ॥९९॥

भावार्थ—जिस जिस भाव में राहु का जो फल कहा गया है उस भाव में केतु का भी फल उसी प्रकार समझना ॥९९॥

इति ग्रहाणां द्वादशभावफलानि ।

अथ राजयोगाध्यायः प्रारम्भः ।

अथ राजयोगाध्यायः—

यदा माहतावो भवेन्मालखाने मिरीखोऽथवा मुश्तरी बख्तखाने ।
अतारिद् विलग्ने भवेद्वख्शपूर्णो भवेद्दानदारोऽथवा वादशाहः ॥१॥

भावार्थ—जिसके जन्म समय द्वितीयभाव में चन्द्रमा और दशमभाव में मङ्गल बृहस्पति हो, लग्न में बुध हो तो वह मनुष्य विशेष धन वाला राजा होता है ॥ १ ॥

भवेदाफतावो यदा षष्ठखाने पुनर्दैत्यपीरोऽथ केन्द्रे गुरुर्वा ।
सुजातः शुतर्फीलताज्पाहयाढ्यो जरीजर्जरावस्यदातश्चिरायुः ॥ २ ॥

भावार्थ—यदि सूर्य षष्ठ भाव में हो, शुक्र या बृहस्पति केन्द्र में हो तो वह मनुष्य अपने कुल में श्रेष्ठ, हाथी, घोड़ा, ऊँट, पालकी आदि सवारियों से युक्त और जरीदार वस्त्र आदि से युक्त, अत्यन्त धनी और दीर्घायु होता है ॥ २ ॥

यदा चश्मखोरा भवेद्दोस्तखाने ततो मुस्तरी दोस्तखानेऽथ लग्ने ।
अतारिद्धनस्थो बृहत्साहिबी स्याद् बृहद् पमख्मल्खजानासुपूर्णः ॥

भावार्थ—जिसके चतुर्थ भाव में शुक्र या बृहस्पति हो, लग्न में बुध हो वह मनुष्य बड़ा प्रतापी और मखमली वस्त्र आदि से तथा पूर्ण खजाना से युक्त रहता है ॥ ३ ॥

तृतीये भवेदाफतावस्य पुत्रो यदा माहतावस्य पुत्रो विलग्ने ।
भवेन्मुस्तरी केन्द्रखाने नराणां बृहत्साहिबी तस्य ताले रुजुः स्यात् ॥

भावार्थ—जिसके जन्म समय तृतीयभाव में शनैश्चर और लग्न में बुध, तथा केन्द्र में बृहस्पति हो तो वह बड़ाही प्रतापी और भाग्यशाली राजा होता है ॥ ४ ॥

यदा मुस्तरी पञ्चखाने मिरीखो यदा बख्तखाने रिपौ आफतावः ।
नरो वा अकूफो भवेत्कुञ्जरेशो बृहद्रोशनो वाहिनीवारणाढ्यः ॥

भावार्थ—जिसके पञ्चमभाव में बृहस्पति, दशमभाव में मङ्गल, षष्ठभाव में सूर्य हो वह मनुष्य बड़ा बुद्धिमान्, बहुत हाथीवाला, बड़ा प्रतापी और सेना सवारियों से युक्त होता है ॥ ५ ॥

अतारिद् विलग्ने सुखे माहताबो
गुरुर्बख्तखाने तमो लाभखाने ।
जहानस्य खूबी भवेन्नेकबख्तः
खजाना गजाढ्यो मुलुक्साहिबी स्यात् ॥ ६ ॥

भावार्थ—यदि लग्न में बुध, चौथेभाव में चन्द्रमा, दशवें भाव में बृहस्पति, राहु केतु एकादश भाव में हो तो वह संसार में प्रसिद्ध धर्म कार्य करने वाला, खजाना से पूर्ण तथा हाथी आदि सवारी वाला राजा होता है ॥ ६ ॥

यदा देवपीरो भवेद् बख्तखाने पुनर्दैत्यपीरोऽथवा स्वप्नखाने ।
अतारीद्विलग्ने तृतीये मिरीखः शनिर्लाभखाने नरः काबिलः स्यात् ॥

भावार्थ—यदि बृहस्पति दशमभाव में हो, नवमभाव में शुक्र, लग्न में बुध, तृतीयभाव में मङ्गल तथा एकादशभाव में शनि हो तो वह मनुष्य हर एक विद्या में निपुण होता है ॥ ७ ॥

हमलमाहताबो व्यये आफताबो यदा मुश्तरी केन्द्रखाने त्रिकोणे ।
भवेन्मानवो देवतेजस्कराढ्यो बृहत्साहिबी बख्तखूबो कमालः ॥

भावार्थ—यदि लग्न से सप्तम में चन्द्रमा, द्वादश में सूर्य, केन्द्र (१।४।७।१०) अथवा त्रिकोण (९।५) में बृहस्पति हो तो वह मनुष्य देवता के सदृश तेजस्वी, प्रतापी, समय को सार्थक करने वाला और सिद्ध पुरुष होता है ॥ ८ ॥

खजानागजाढ्यो भवेल्लश्कराढ्यो जहानप्रियो मुश्तरी जायखाने ।
मिरीखोऽथ लाभे बुधः पञ्चखाने शनिःशत्रुखाने नरः काबिलः स्यात् ॥

भावार्थ—जिसके सप्तमभाव में बृहस्पति, एकादश में मङ्गल, पञ्चम

भाव में बुध, षष्ठभाव में शनैश्चर हो वह मनुष्य पूर्ण खजाना से युक्त, सेना से सहित, संसार में सब का प्रिय और बुद्धिमान् होता है ॥ ९ ॥

कमर् केन्द्रखाने शनिः शत्रुखाने त्रिकोणेऽथवा मुश्तरी चश्मखोरा।
स जातो नरः साबिरः सद्गुणज्ञो भवेच्छायरो मालदारोऽथ खूबी ॥

भावार्थ—यदि चन्द्रमा केन्द्र (१।४।७।१०) में हो, षष्ठभाव में शनैश्चर, तथा बृहस्पति या शुक्र त्रिकोण (९।५) में हो वह मनुष्य सन्तोषी, सद्गुणों से युक्त और कविता बनानेवाला, अत्यन्त धनवान और रूपवान होता है ॥१०॥

मिरीखोऽथवा खेशख्मौलिखाने गुरुमौतराशौ जया माहताबः ।
भवेज्जन्मकाले यदा चश्मखोरो जुलीखप्रहर्ता जहानप्रचण्डः ॥११॥

भावार्थ—यदि द्वितीय भाव में मङ्गल, अष्टमभाव में बृहस्पति, सप्तमभाव में चन्द्रमा, और लग्न में शुक्र हो तो वह मनुष्य शत्रुओं का नाश करनेवाला और संसार में प्रतापी होता है ॥११॥

धनस्थे कुमुद्बन्धु षष्ठे रविः स्यात् सखव्योम्नि विर्चोत विद्वान् कविश्च।
बृहत्सावरी शालमखल्बनातः शुतुर्फीलफानूसतम्बूकनातः ॥१२॥

भावार्थ—यदि द्वितीयभाव में चन्द्रमा, षष्ठभाव में सूर्य, चतुथ में बुध और दशमभाव में शुक्र हो तो वह मनुष्य बड़ा ही सन्तोषी विद्वान्, शाल दोशाला मखमली वस्त्र ऊँट, हाथी, तम्बू, कनात आदि वस्तुओं से युक्त होता है ॥१२॥

आठ्खाने चश्मखोरा मालखाने च मुश्तरी ।
राहु जो पैदामकाने शाह होवे मुल्कका ॥१३॥

भावार्थ—यदि अष्टमभाव में शुक्र, द्वितीयभाव में बृहस्पति और लग्न में राहु हो तो वह समस्त संसार का राजा होता है ॥१३॥

यदा मुश्तरी कर्कटे वा कमाने यदा चश्मखोरा जमी वा समाने ।
तदा ज्योतिषी क्या लिखे क्या पढ़ेगा हुवा बालका बादशाही करेगा ॥

भावार्थ—यदि बृहस्पति कर्क अथवा धन में हो तथा शुक्र द्वितीय या दशमभाव में हो तो वह मनुष्य निश्चय बादशाह होता है। उसके भाग्य का विचार ज्योतिषी कहाँतक कर सकता है ॥१४॥

यदा चश्मखोरा भवेल्लग्नखाने तदा मुश्तरी बख्तखाने निलग्नात् ।
स जातः शुतुर्फीलजातीहयाढ्यो जरीजर्जरी वक्रदाता चिरायुः ॥

भावार्थ—यदि शुक्र लग्न में हो, और बृहस्पति दशम भाव में हो तो वह जातक ऊँट, हाथी, घोड़ा आदि सवारी से युक्त तथा जरीदार कपड़ा आदि रखनेवाला तथा धनी और दीर्घजीवी होता है ॥१५॥

आफतावो मालखाने यस्य जन्मनि च ध्रुवम् ।
सकलरोजीमुश्किलं पड़ैं फांके मुफ्लिसम् ॥१६॥

भावार्थ—यदि सूर्य द्वितीयभाव में हो तो वह मनुष्य रोजगार से हीन हो, उसे खाना भी मुश्किल से मिलता और वह बेकार रहता है ॥

यदा शत्रुखाने पड़े उच्चका। करै खाक दौलत फिरै जावजा ॥१६॥

भावार्थ—यदि उच्च (मेषराशि) का सूर्य छठे भाव में हो तो उस मनुष्यका सब धन मिट्टीमें मिल जाता है और वह घर २ घूमा करता फिरा है ॥

आयुखाने चश्मखोरा मालखाने मुश्तरी ।
सवाबखाने चन्द्रदीदम् बादशाहस्यवरो ॥१८॥

भावार्थ—यदि शुक्र अष्टमभाव में हो और द्वितीयभाव में बृहस्पति तथा नवमभाव में चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य राज-मन्त्री होता है ॥१८॥

हमल् आफताबो वृषे माहताबो यदा मुश्तरी केन्द्रखाने त्रिकोणे ।
भवे मानवो दौलतो लश्कराढ्यो बृहत्साहिबो तस्य खूबी कमालः ॥

भावार्थ—यदि मेष का सूर्य, और वृष का चन्द्रमा और शुक्र हो केन्द्रत्रिकोण (१।४।७।१०।५।९) स्थान में बृहस्पति हो तो वह मनुष्य धनवान्, सेना से युक्त, बड़ा प्रतापी, सुन्दर रूपवाला और यशस्वी होता है ॥१९॥

हमल् आफ़ताबो वृषे माहताबस्त्रिकोणेऽपि वा मुश्तरी चश्मखोरा ।
नरो जायते राहरासन् गुणज्ञो भवेच्छायरो मालदारोतिखूबी ॥

भावार्थ—यदि सप्तम भाव में सूर्य, और वृष का चन्द्रमा हो, बृहस्पति और शुक्र केन्द्र त्रिकोण में हो तो वह मनुष्य सर्वगुण को जाननेवाला, कविता करनेवाला, धनवान् और रूपवान् होता है ॥

यदा मुश्तरी कर्कटे वा कमाने झषे खेटपुत्रो वसेत्कारखाने ।
ससं वीक्षते खूबखेटाः समस्ता भवेन्मदवं दर्दयन्तु दयालुः ॥२१॥

भावार्थ—यदि कर्क अथवा धनराशि का बृहस्पति हो तथा मीन का शनैश्चर द्वितीय भाव में हो उसको समस्त शुभग्रह देखते हों तो वह मनुष्य सामर्थ्यवान् और दयालु होता है ॥२१॥

यदा भाग्यमालिक भलेघर पड़ै कमाकर सुदौलत् खजाने भरै ।
करैंगे जबरूशी अमीरी सुफल वजीरी अमीरी करैं बेफिकर ॥

भावार्थ—यदि एकादश भाव का स्वामी, भले घर (अपने उच्चस्वगृह मूलत्रिकोण मित्रराशि आदि शुभ स्थान) में हो तो वह मनुष्य धन कमाकर अपने खजाना को भरता है। और निश्चिन्त होकर अमीरी वजीरी आदि काम करता है ॥२२॥

यदा चश्मखोरा भवेद् हफ्तखाने शशी दोस्तखाने मिरीखोऽथ नक्रे ।
सुरत्कमालो नरो दीनदारो गनीमप्रहन्ता जहानप्रचण्डः ॥

भावार्थ—यदि सप्तमभाव में शुक्र, चौथे भाव में चन्द्रमा और मकर का मङ्गल हो तो वह मनुष्य सुन्दर रूपवाला, बड़ा उपकारी आदमी, शत्रुओं को नाश करनेवाला और संसार-प्रसिद्ध होता है ॥२३॥

जमीजोऽथ नक्रे शनौ मौतखाने गुरौ माहराशौ जरे माहतावः ।
भवेज्जन्मकाले नरो वा उदारो गनीमप्रहन्ता जहानप्रचण्डः ॥

भावार्थ—यदि मकर में मङ्गल, अष्टम में शनैश्चर, कर्क में बृहस्पति

तथा द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य उदारहृदयवाला, शत्रु की सेना को नाश करनेवाला, संसार में प्रसिद्ध पुरुष होता है ॥२४॥

यदा मुश्तरी केन्द्रखाने त्रिकोणे यदा वक्तखाने रिपौ आफताबः।
अतारिद् विलग्ने नरो बक्तपूणस्तदा दीनदारोऽथवा बादशाहः॥

भावार्थ—यदि शुक्र केन्द्र त्रिकोण (१।७।१०।४।९।५) में हो, बा(रहवें) भाव में सूर्य और लग्न में बुध हो तो वह मनुष्य समय को सा(र्थक) करनेवाला, बादशाह अथवा बड़ा आदमी होता है ॥२५॥

इति खेटकौतुकीयभावार्थः समाप्तः ॥ शुभम् ॥

—०—

पुस्तकप्राप्तिस्थानम्—

[१]

मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स,
संस्कृतबुकडिपो,
कचौड़ीगली, काशी ।

[२]

ई० जे० लाजरस ऐण्ड कम्पनी,
मेडिकलहाल प्रेस, बनारस ।

पं० श्रीसीतारामझाकृतपुस्तकानि—

अवकहड़ाचक्र—अर्थात् फलितज्यौतिष ।≡)
ग्रहबलचक्र—भा० टी० ।)
केशवीयजातकपद्धति—सोदाहरण, सोपपत्ति, सं०टी०, भा०टी० २)
केरलप्रश्नसंग्रह—भा० टी० ॥) खेटकौतुक—भा० टी० ।≈)
गोलपरिभाषा—छायाक्षेत्रविचारसहित ।)
गणितसोपान— ।≈) गर्भमनोरमा—भा० टी० ≡)
ग्रहलाघव—सोदाहरण, सोपपत्ति, सं० टी०, भा० टी० १॥)
जातकालङ्कार—सं० टी०, भा० टी० ॥≈)
जैमिनिसूत्र—सं० टी०, भा० टी० १।)
ताजिकनीलकण्ठी—सोदाहरण, सोपपत्ति, सं० टी०, भा० टी० २॥।)
धराचक्र—भा० टी० ≡) पद्मकोष—सं० टी० (द्वि०सं०) ।≈)
नाडीवृत्तपञ्चविंशतिका—भा०टी० ≈)
बृहत्पाराशरहोरा—(पूर्वखण्ड) १०) सम्पूर्ण का १४)
भावप्रकाशज्यौतिष—भा०टी० ॥≈) मा[illegible]ध्याय—भा० टी० ≡)
मुहूर्तचिन्तामणि—सान्वय, भा०टी० २॥)
मुहूर्तमार्तण्ड—सं० टी०, भा० टी० १)
रेखागणित—षष्ठाध्याय ।≈) लघुजातक—सं० टी०, भा० टी० १॥)
लघुपाराशरी—मध्यपाराशरी, सोदाहरण, भा० टी० ॥≈)
लग्नप्रदीप—प्रथम भाग ≡) लग्नवाराही—भा० टी० ≈)
लीलावती—सोदाहरण, सोपपत्ति, सं० टी०, भा० टी० २॥)

पुस्तकप्राप्तिस्थानम्—

मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स,
संस्कृत-बुकडिपो,
कचौड़ीगली, बनारस।

मुद्रकः—मास्टर प्रिण्टिङ्गवर्क्स, बुलानाला, काशी।